Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

पर्यावरण व प्रदूषण नियंत्रण (वेद)

Prof. Alka.K.Champaneri*

पर्यावरण एक अत्यंत व्यापक एवं संश्लिस्ट विषय है, और उसका अवनयन उतनी ही जटिल एवं बहु आयामी समस्या है | पर्यावरण संरक्षण की हमारी चिन्ता और चिन्तन का संदर्भ स्पष्टतया अंतरानुशासिक है| शाष्दिक द्रष्टिकोण से पर्यावरण का अर्थ है - आसपास या पास पडोस | मनुष्य के आसपास भौतिक वस्तुओ जैसे स्थल , जल, वायु आदि का वह आवरण जिससे मनुष्य घिरा होता है इसको पर्यावरण कहा जा सकता है | चारो और का वातावरण सी.सी पार्क के अनुसार - पर्यावरण का अर्थ उन दशाओं के योग से है जो मनुष्य को किसी निश्वित समयमें निश्वित स्थान पर आवृत कराती है. पर्यावरण से सतत अंतक्रिया का ही नाम जीवन है | प्राकृति पर्यावरण की गोद में हम जन्म लेते है पलते बढ़ते है और जीवन यापन करते है। हमारे चारों और स्थल जल और वायु मंडल है। साथ ही अनेक किस्म के पेड - पौंधे और छोटे बड़े जीव-जन्तु भी है | इनके बिना हम अपने अस्तित्व की आधारभूत आवश्कयताओ की पूर्ति नहीं कर सकते इनमे कटकर हम अर्थपूर्ण जीवन ही नहीं जी सकते | हम पर्यावरण में है और पर्यावरण हम में है | मनुष्य खुद प्रकृति के लिए पर्यावरण है | मनुष्य के हित के लिए पर्यावरण की अवधारणा और क्षेत्र काफी हद तक प्राथमिकताओ के आधार पर निर्धारित होते रहे है | अतएव पर्यावरण अर्थ स्पष्ट करते हुए-

पर्यावरण एक अविभाज्य समष्टि है तथा भौतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक तत्वोंवाले पारस्परिक क्रियाशील तंत्रों से इसकी रचना होती है ये तंत्र में परस्पर सम्बन्ध होते है

भौतिक तत्व - (स्थान, स्थलरुप, जलियभाग, जल वायु, मृरा, (अजैविक तत्व) शैल तथा खनिज) मानवनिवास्य क्षेत्र की परिवर्तनशील विशेषताओ, उनके सुअवसरो तथा प्रतिबंधक अवस्थितिओ कोनिश्वितकरते है |

जैविक तत्व - पौंधे, वनस्पतिक , जन्तु, सूक्ष्म, जीव, तथा मानव जीवमंडल की रचना करते है | सांस्कृतिक तत्व (आर्थिक, सामाजिक, तथा राजनैतिक) मुख्यरूप में मानवनिर्मित होते है तथा सांस्कृतिक पर्यावरण की रचना करते है |

जंतु जगत में सर्वाधिक अहमकारक खुद मनुष्य है वह एक बुध्धिमान प्राणी है अत: वह एक बहुस्तरीय और जटिल सामाजिक संगठन की रचना करता है इसके फल स्वरूप सामाजिक पर्यावरणका आर्विभाव होता है,सभी जीव अपने जीवन निर्वाह और संवर्धन के लिए

***Prof. Alka.K.Champaneri**

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

कमोषेश भौतिक का उपभोग करते है|लेकिन अन्य जीवो की उपेक्षा मनुष्य अपने भौतिक पर्यावरण का दोहन और भोग करने में काफी आगे है | उसकी ऐसी गतिविधि के द्वारा आर्थिक पर्यावरण का निर्माण होता है , अपने अस्तित्व की रक्षा और संवर्धन के लिए मनुष्य द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण का एक हद तक उपभोग अपरिहार्य है| अनिवार्य मानवीय उपभोग और प्राकृतिक पर्यावरण केबीच प्राय: एक नाजुक संतुलन होता है| किन्तु मनुष्य अपनी विदोहनात्मक क्रियाकलापो द्वारा पर्यावरण की नाजुक सीमा का खतरनाक ढंग से उलंघन करता है | फल स्वरूप कई तरह की पर्यावरण समस्याए उत्पन्न होती है | इनका असर विनाशकारी और विश्वव्यापी होता है इनके जो संकट मौजूद समय में पैदा हुआ है वह न केवल मानवजाति के लिए बल्कि पर्यावरण के समस्त घटकों के लिए घातक है.मनुष्य कई प्रकार से पर्यावरण संतुलन और इसकी गुणवता को क्षति पहुँचाता है, मानवजनित प्रक्रियाओ द्वारा होनेवाला पर्यावरण निम्नलिखित है |

१. प्राकृतिक संसाधनों के लोलुपतापूर्ण एवं अंधाधुंध विदोहन से उनके भण्डार ख़तम होने के कगार पर पहुँच गये है |

२. औधोगिकीकरण , नगरीकरण, तथा परिवहन के वाहनों में बेतहासा बढ़ोतरी के करण वायु प्रदूषण की खतरनाक स्थिति उत्पन्न हो गई है |

३. वायुप्रदुषण के चलते वायुमंडल की प्राकृतिक गैसीय संरचना तथा उष्मा संतुलन में गड़बड़ी पैदा हो गयी है | इसमे ओजोन- क्षय , हरितगृह प्रभाव और जलवायु परिवर्तन का वैश्विक संकट उत्पन्न हो गया है |

४. कारखानों के अपशिष्ट पदार्थो, नगरों के जल - मल, खेतों में प्रयुक्त रासायनिक खादों कीटनाशक और शाकनाशी दवाइयों आदि के कारण बड़े पैमाने पर जल - प्रदूषण हो रहा है | फलत: विश्व के कई भागो में पेयजल की कमी हो गयी है |

५. वनों की कटाई करके मनुष्य बड़े पैमाने पर खेती - बारी औरगांव - शहर का विस्तार करता आया है | वन-विनाश से कई तरह की जटिल पर्यावरणीय समस्याएं पैदा हुई है , जेसे - मृदा-अपरदन, जैव-विविधता में कमी, कृषि उत्पादकता में हास, जलवायु परिवर्तन , भूमिगतजल की अल्पता, बाढ़ की विभीषिका आदि |

६. जैव विविधता को मनुष्य ने अपने अविवेकपूर्ण और लालची रवैये केकारण अपूर्णीय क्षति पहुचाई है | उसने जगह जगह वनस्पतियों और जन्तुओ, उनके प्राकृतिक आश्रयों और आहार श्रृंखला का विनाश किया है| अपने आर्थिक फायदे के लिए सुने स्थान विशेष की

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

मौलिक वनस्पतियों और जंतुओ को अन्य जातियों द्वारा प्रतिस्थापित किया है | रासायनिक उर्वरकों और रसायनों के प्रयोग केकारण कई जीवों का जीव दुश्वार हो गया है |

७. भूमि उपयोग में भरी उलट - फेर करके मनुष्य ने मृदा प्रदूषण की भयावह स्थिति पैदा कर दी है | खनन, उधोग, वैज्ञानिक कृषि, नगरीकरण, न्यूकलियर संयंत्र, इलेक्ट्रोनिक कचरा आदि से उत्पन्न अपशिष्टों का प्रबंधन और निस्तारण अब दुनियाभर में एक जटिल समस्या बन गयी है|

८. कल - कारखानों, विभिन्न प्रकार के उपकरणों और वाहनों, विस्फोटको आदि से ध्वनि प्रदूषण बढ़ गया है | इससेखुद मनुष्य अधिग्नता, खीज, अनिद्रा आदि से पीड़ित है | बढ़ते शोरगुल से अन्य जीव-जंतुओ का भी सुख चैन हराम हो जाता है |

विशेषतया मानव पर्यावरण केबीच बदलते बिगड़ते संबधो के पीछे सबसे प्रभावी कारण प्राधोगिकी का विकास रहा है, इससे बल पर मनुष्य पर्यावरण का परिवर्तनकर्ता और विध्वंसकर्ता बन बैठा है | उत्पादन और उपभोग की प्रणाली विकसीत की जा रही है | जो पर्यावरण के लिए घातक है, इस दशा में विचार करने से एसा लगता है की हमारी समस्या हमें कहा ले जा रही है | जब विश्व की सभ्यताए राक्षसीभाव जगा रही है और अतिशय भोग की अग्नि जीवन को सुलसा रही है तो ऐसे माहोल में सुरम्याप्रकृति के रसास्वाद की बात करना अप्रासंगिकन होगा | विज्ञान ने हमें निपट वास्तववादी बना दिया है | हम प्रकृति को निरावस्तु समजकर हममे सहज आत्मीयता घटने लगी है | हम भूल रहे है की हम जितने भीतर है उससे कही अधिक बाहर है|

पर्यावरणीय संकट की गंभीरता ने सनातन धर्म के मूल्यों और आदर्शो कोनये सिरे से प्रासंगिक बना दिया है, कुल मिलकर कहा जाता है, पर्यावरणीय अवधारणा पश्चिमीदेशो के लिए नयी हो सकती है, किन्तु, भारत के त्रुषियो, मनीषियों ने इसे सहस्त्रों वर्षो पूर्व स्थापित कर दिया था | उनके द्वारा निर्देशित जीवन पध्धति इस प्रकार थी की वृक्ष लताओं नहीं तडागों और जीव जंतुओ को हानि पहुचाये बिना मनुष्य आराम से पृथ्वी पर रह सके | वेद मानव मात्र के लिए जिस प्रकार प्राचीन काल में अत्यंत महत्वपूर्ण था उसी प्रकार आज के मानव के लिए उतने नहीं वरन् उससे भी अधिक कल्याणकारी है|

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

पर्यावरणीय आचारनीति की भारतीय परम्परा और अंतर्गत अनेक पेड़ पौंधो और पशु-पक्षीयो को देवी-देवताओ से सम्बंधित माना गया है| यहाँ उसका एक व्यवस्थित निरूपण प्रासंगिक है|

I. देवी - देवतओं से सम्बंधित पशु व् अन्य वन्य जीव जन्तु

पशु/जीव-जन्तु	देवी - देवता
सिंह	दुर्गा, बुध
हस्ती	इन्द्र
हंस	सरस्वती
गरुड़	विष्णु, कृष्ण
मत्स्य	काम
अश्व	सूर्य
गौ	कृष्ण
मकर	वरुण
मेष	मंगल
महर्षि	यम
वन्य हंस	ब्रह्मा
वृषभ	शिव
मूषक	गणेश
सर्प	शिव
कपि	हनुमान
मयूर	कार्तिकेय
वृषभ, श्वानएवं पक्षी	दत्तात्रेय
गृध (गिध्द)	शनि

II. देवी- देवताओ सम्बंधित वृक्ष

वृक्ष का नाम	देवी देवता
वट	ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, काल, कृष्ण, पंचानन, लक्ष्मी, कुबेर, यक्षिणी आदि|

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

तुलसी	राम,कृष्ण, विष्णु, नारायण, जग्गनाथ, लक्ष्मी आदि|
रुद्राक्ष	रूद्र, विष्णु , दुर्गा, गणेश, सूर्यआदि|
पूग (सुपारी)	विष्णु, प्रजापति आदि|
धात्री (आंवला)	केशव, ब्रह्मा, लक्ष्मी आदि|
बिल्व	महेश्वर, शिव, दुर्गा, लक्ष्मी, सूर्य, विष्णु, ब्रह्मा, गणेश आदि|
पीपल	विष्णु, लक्ष्मी, वनदुर्गा आदि|
आम	लक्ष्मी, विष्णु, प्रजापति, गोवर्धन आदि|
अशोक	बुध्द, इन्द्र, विष्णु, आदित्य आदि|
कदम्ब	कृष्ण

III. पर्यावरणीय सम्बंधित देवी देवता

देवी देवता	पर्यावरण से सम्बन्ध
सूर्य	जलवायु का अधिष्ठाता स्वरूप है|
इन्द्र	मेघो में स्वामी है, पृथ्वी पर जीवनदायिनी जल की वर्षा कराते है|
मरुत	झंझावात या तूफान का देवता है ।
वरुण	जल के देवता है, समुद्र का आपर कोष इनके अधीन है ।
चन्द्रमा	वृक्षों, ओषधियो, वन एवं मन के स्वामी है, समस्तजीवों के प्राण है तथा समुद्र में ज्वार उत्पन्न करते है ।
यम	मृत्यु के देवता है, मानव प्रदुषण फेलाने वालो को नरकादि में प्रेषित कर दण्ड देते है ।
ब्रह्मा	सृष्टिकर्ता देव है ।
विष्णु	सृष्टि के पालनकर्ता देव है ।
शिव	सृष्टि के विध्वंसक एवं कल्याणकारी देव है ।

इस तरह परम्परा के अनुसार मानवको इश्वरने अपनी छबी में रचा है तो इस नाते से प्रकृति से समस्त संशाधनो और अन्य जीवों का मनचाहा उपयोग करने का विशेष अधिकार है|

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

धार्मिकता को ध्यान में रखकर, वेद, उपनिषद, पुराण आदि सनातनधर्मग्रंथोमें तत्व चिन्तन, विश्वविज्ञान औरनीतिमीमांसा के क्रम में कई जगह प्रकृति एवं पर्यावरण से सम्बंधित सरोकार और सिध्धांत व्यक्तरुण है उनमे अभिव्यक्त पर्यावरणीय पक्षका समसामयिक संदर्भ में रचनात्मक सर्वेक्षण प्रस्तुत करना मेरा मुख्य उदेश है| वैदिककाल से ही भारतीय मनीषा पर्यावरण के संदर्भमें इस तथ्य को उजागर करती रही है कि, लोकरक्षक के लिए प्रकृति की रक्षा करो |

"रक्षायै प्रकृति पातुलोक:" |

वेदों में सभी तत्वोंके लिए और मनुष्य के मंगल एवं समृध्धि हेतु शांतिकी कामना की गई है |

वैदिक त्रुषियो कोपर्यावरण के प्रमुख घटकों (तत्वों की) कीस्पष्ट चेतनाथी इसलिए वेदों में बताए इन तत्वों को प्रदूषण मुक्त रखना ही शांति है इसी रूप में सुप्रसिध्ध शांतिमंत्र में पर्यावरण के विभिन्न भावयवों की शुध्धि और संतुलन की कामना की गई है |

ॐ धौ: शान्तिरन्तरिक्ष् शान्ति:
पृथिवी शान्तिराप:
शान्तिरोषघय: शान्ति:
वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा:
शान्तिब्रहम शान्ति: सर्वं शान्ति:
शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि |

पर्यावरण का अर्थ वेदों में परिधि, परिभू परिवृत आदि उपलब्ध है | पर्यावरण प्रदूषण में प्राकृतिक तत्वों को दूषित करनेवाले सभी प्रकार के हानिकारक तत्व आते है | इनमे मुख्यरूप से चार तत्वों का वर्तन वर्णन मेने प्रस्तुतलेख में किया है | भूमि-प्रदुषण, जल-प्रदुषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनी-प्रदूषण.

वेदों में पर्यावरण के घटक तत्व : अथर्ववेद के एक मंत्र में वर्णन किया गया है कि पर्यावरण के घटक तत्व तीन है - जल वायु और ओषधियाँ अर्थात् वृक्ष औरवनस्पति | इनके विषय में कहा गया है कि ये भूमि को घेरे हुए है| इस जीवन की रक्षा के लिए इन तत्वों की अत्यंत आवश्कयता है | अतएव वेद में कहा गया है कि प्रत्येक लोक के लिए इनकी उपस्थिति अनिवार्य है | जल औए वायु के बिना कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता है | वृक्ष - वनस्पतियों के बिना प्राणशक्ति प्राप्त नहीं होगी | अत: आक्सीजन के लिए वर्कश -

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X
वनस्पतियों की उपस्थिति आवश्यक है| जहाँ ये तीनों तत्व नहीं होंगे , वहाँ पर जन - जीवन संभव नहीं है | इसी बात को मंत्र में स्पष्ट किया गया है | साधारणतया से केवल जल वायु ही लिया जाता था, परन्तु सर्वप्रथम अथर्ववेद ने पर्यावरण में ओषधियाँ अर्थात वृक्ष - वनस्पतियों की उपस्थिति अनिवार्य बताई है |

त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे

पुरुरुपं दर्शतं विश्वचक्षणम् |

आपो वाता ओषधय :

तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि | | अथर्व १८.१.१७

वेदों में पर्यावरण - अथर्ववेद में पर्यावरण का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि जहा पर पर्यावरण शुध्ध होता है , वहाँ पर मनुष्य पशु-पक्षी आदि सभी सुखपूर्वक जीवित रहते है |

सर्वो वै तत्र जीवति गोरश्व: पुरुष: पशु: |

यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जिवनाय कम् | अथर्व ८.२.२४

ऋग्वेद में घु-भू (घुलोक और भूलोक), वन, और ओषधियाँ, जल और पर्वत तथा अग्नि को पर्यावरण का रक्षक बताया गया है | अथर्ववेद में कहा गया है किपर्वत, वायु, अग्नि ये पर्यावरण-प्रदूषण को रोकते है और भूलोक को प्रदुषण से मुक्त करते है| त्रुग्वेद के एक मंत्र में यह भी कहा गया हैकी परमात्माने मनुष्य को बहोत सारे उपहार दिए है | पृथिवी में अक्षय भंडार है| इन भण्डार की रक्षा वृक्ष - वनस्पति, पर्वत, जल और नदियों के स्त्रोत करते है| पृथिवी के अन्दर रत्न, मणि, खनिज, पेट्रोल, कोयला, तेल, आदि पदार्थ है | इनकी सुरक्षा के लिए वृक्षवनस्पतियाँ आदि है | यदि हम इन रक्षक तत्वों को नष्ट करते है तो भूमि के अन्दर जो खनिज पदार्थ है, उन पर कुप्रभाव पड़ेगा

(क) धर्तारो दिव : ..... वाता: पर्जन्या |

आप ओषधी: प्र तिरन्तु | ऋग् १०.६६.१०

(ख) त्रि: सप्त सस्त्रा नधो महीरपो ,

वनस्पतीन् पर्वतान् अग्निमुत्ये| ऋग १०.६४.८

(ग) वात: पर्जन्य आद्ग्निस्ते क्रव्याद्मशीशमन् | अथर्व ३.२१.१०

(घ) पूर्वीरस्य निषिषधो मत्र्येषु

पुरु वसूनि पृथिवी बिभर्ति |

इन्द्राय घाव ओषधीरुतपो

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

रयिं रक्षन्ति जीरयो वनानि || ऋग ३.५१.५

घावापृथिवी (घु-भू) का संरक्षण

वेदों में वायुमण्डल की शुध्धि के लिए घु - भू संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है| घु - भू में सूर्य, अन्तरिक्ष और पृथिवी तीनो का समावेश है| घु-भू परस्पर सम्बध्ध है| इनमे पोष्यपोषक सम्बन्ध है| सूर्य उर्जा का स्त्रोत है| अंतरिक्ष वृष्टि देता है और पृथिवी उर्जा और वृष्टि का उपयोग करके अन्नादि की समृध्धि सेजन-जीवन को संचालित करती है| ये तीनो का परस्पर सम्बध्द है| वायुमण्डल उर्जा देकर मानव - मात्र को जीवित रखता है| वृक्ष - वनस्पति आक्सीजन देकर मानव को शक्ति प्रदान करतेहै| वृक्ष - वनस्पति वर्षा पर निर्भरहै| इस वृष्टिके चक्र को नियमित बनाने के लिए यज्ञ की आवश्कयता होती है| इस प्रकार पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के सम्मिलित रूप से मानवजीवन का संचालन कर रहे है| ईस संतुलनको बिगाड़ने के कारण प्रदूषण है| इन प्रदूषणों को रोकने के लिए वेदों में ये उपाय बताया है - १. वृक्षों को लगाना,२. वृक्षों के काट ने पर प्रतिबन्ध, ३. वनों की सुरक्षा पर ध्यान देना, ४. यज्ञ के द्वारा वायुमण्डल को शुध्ध करना, ५. प्रदूषण-नाशक ओषधियो और वृक्षों को लगाना, ६. जल और भूमि को प्रदूषित न करना|

घु - भू माता पिता - वेदों के अनेक मंत्रो में घुलोक को पिता और पृथिवी को माता कहा गया है | हमारा कर्तव्य है की हम घु और भू किसी को भी प्रदूषित न करे |

(क) माता भूमि : पुत्रो अहं पृथिव्या : | अथर्व १२.१.१२

(ख) भुमिर्माता, भ्रातान्तरिक्षम, घौर्न: पिता| अथर्व ६.१२०.२

घु-भू उर्जा के स्त्रोत- यजुर्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि घुलोक और पृथिवी उर्जा (Energy) प्रदान करते है | वनस्पतियाँ शक्ति प्रदान करती है | जल बल और वीर्य प्रदान करता है | इस प्रकार घु - भू वनस्पतियाँ और जल अनेक प्रकार से उर्जा के स्त्रोत हैं |

दिव: पृथिव्या: प्रर्योज उदभृतम,

वनस्पतिभ्य: पर्याभृतं सह,

अपाम ओज्मानम | यजु २१.५३

घु-भू को प्रदूषित न करें- वेदों में अनेक मंत्रो में कहा गया है कि घु-भू को प्रदूषण से मुक्त रखे | यह भी आदेश दिया गया है कि ऐसा कोई कार्य न करें , जिससे घु-भू को हानि पहुंचे | त्रुगवेद के ऐक मंत्र में चेतावनी दि गई है कि यदि इनको प्रदूषित करते है तो विपति और संकट (नित्रुती) उपस्थित होंगे | यजुर्वेद के ऐक मंत्र में स्पष्ट कहा गया हैकि

ISSN NO: 2395-339X

घु - भू हमारी रक्षा करेंगे | यदि हम उनको प्रदूषित करते है, तो ये हमारे लिए संकट पैदा करेंगे |

(क) घौश्च्व न: पृथिवी च प्रचतेस: ... रक्षताम् |

मा दुर्विदत्रा निऋतिर्न ईशत | ऋग १०.३६.२

(ख) अवतां त्वा घावापृथिवी,

अव त्वं घावापृथिवी | यजु २.९

यजुर्वेद के अनेक मंत्रो मयः कहा गया है कि हम घुलोक - अन्तरिक्ष, पृथिवी को कोई हानि न पहुँचावें | घुलोक और भूलोक को प्रदुषण से मुक्त रखें| ऐक मंत्र में यह भी कहा गया है की यदि पृथ्वी के किसी भि भाग को हम खोदते है तो उसे पूरा कर दें| मंत्र में कहा गया है की पृथ्वी के मर्मस्थलो को कोई हानि न पहुंचावें | इसका अभिप्राय यह है की हम पृथिवी से कोयला , गैस आदि निकालते है | उससे रित्क हुए स्थानों को फिर से पूरा करें , अन्यथा भू-संतुलन बिगड़ता है और भूकम्प, भूभाग का दबाना या जलादि के स्त्रोतों का सूख जाना आदि संकट पैदा होंगे |

(क) घां मा लेखी :, अन्तरिक्षं मा हिंसिः,

पृथिव्या संभव | यजु० ५.४३

(ख) पृथिवी द्रहं, पृथिवीं मा हिंसी : | यजु १३.१८

(ग) यते भूमे विखनामि, क्षिप्रं तदपि रोहतु |

मा ते मर्म विमृग्वरि, मा ते हर्द्यर्पिपम् ||१२.१.३४

यजुर्वेद में राजा का उतरदायित्व बताया गया है की वह पृथिवी माता को कोई हानि न पहुँचावे और साथ ही कहा गया है की पृथ्वी भी तुम्हें कोई हानि न पहुँचावे | इसका अभिप्राय यह अहि की राजा का कर्तव्य है की वह पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त रखे | यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह पृथ्वी भी उसको दण्ड देगी | ये दण्ड दुर्भिक्ष , भूकम्प और खेती का सूख जाना, ऊर्जा के स्त्रोतों का नाश, अतिवृष्टि और अनावृष्टि आदि का होना | यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि पृथिवी का और हमारा बराबरी का सहयोग है | यदि हम प्राकृतिक नियमो का पालन करते हैं और वातावरण को शुध्ध रखते हैं तो प्रकृति हमारा सहयोग करेगी | अच्छी वर्षा होगी, बीमारियाँ नहीं होंगी और कोई प्राकृतिक आपदा नहीं होगी | यदि हम प्रकृति से असहयोग करते हैं तो प्रकृति हमसे बदला लेती है और अकाल , दुर्भिक्ष आदि महामारी और अन्न, जल का कम होना प्रारंभ होगा|

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

(क) मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् | ऋग् ५.४३.१५

(ख) पृथिवी मातर्मा मा हिंसी:,

मो अहं त्वाम् | यजु १०.२३

जल संरक्षण

जल क महत्व - वेदों मे जल कि उपयोगिता और महत्व पर बहुत प्रकाश डाला गया है | जल जीवन है , अमृत है , भेषज है, रोगनाषक है और आयुवर्धक है | जल के लिए कह गाय है कि जल मे ओषधियो के तत्व विधमान है | वह सरे रोगोंका इलाज है | यह मनुष्य को जीवन शक्ति प्रदान करता है | जल सर्वोतम वैध है | यह अन्य रोगों के अतिरिक्त हर्दय के रोगों का भी इलाज है | त्रुग्वेद का कथन है की जल और वनस्पतियों का मनुष्य पर बहुत उपकार है | वर्षा के जल को सबसे उत्कृष्ट और अमृत बताया गया है | जल ही मानवजीवन का आधार है | हमारा कर्तव्य है की जल को किसी भी प्रकार से दूषित न करेंऔर न होनें दे |

(क) अप्स्वन्तरमृतम् अप्सु भेषजम् | ऋग् १.२३.१९

(ख) आप:.... भिषजां सुभिषतकमा : |अ ६.२४.२

(ग) आपो.... हृद्घोतभेषजम् | अ ६.२४.१

(घ) आपश्व मे विरुध्स्च मे| यजु १८.१४

जल और वनस्पतियाँ मानव के रक्षक - एक मंत्र में कहा गया है की जल ओषधि , वन, वृक्ष और पर्वत मानव के रक्षक है | अतएव जल को किसी प्रकार भी दूषित न करें | यजुर्वेद में जल को शुध्ध रखो, पौष्टिक गुणों से युक्त करो और इनमे ओषधि डालकर सुरक्षित रखो | प्रदूषण - रहित जल ही स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है| यज्ञ के द्वारा नदी आदि के जल को शुध्ध करने का विधान है | यज्ञ पुरे वातावरण को शुध्ध करता है | अत: यज्ञ के द्वारा नदी आदि का भी जल शुध्ध होता रहता है |

(क) आप ओषधीरुत नोएवन्तु,
घौर्वना गिरयोवृक्षक्रेशा: | ऋग ५.४१.११

(ख) माण्पो हिसी:, मा ओषधीर्हिंसी: | यजु ६.२२

(ग) अपोदेवी : ... सिन्धुभ्य: कर्त्वं हवि: ऋग१.२३.१८

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

वृक्ष वनस्पति संरक्षण

वृक्ष - वनस्पतियोंका महत्त्व - अथर्ववेद में कहा गया है की वृक्ष - वनस्पतियोंमें सभी देवों की शक्तियाँ विधमान है | ये मनुष्य को जीवन-शक्ति देते है और उसकी रक्षा करते है | अतएव इन्हें"वैश्वदेव" कहा गया है | इसलिए उन्हें "विषदूषणी" कहागया है |

(क) वीरुधो वैश्वदेवी: उग्रा: पुरुषजीवनी: | अ ८.७.४

(ख) उग्रा या विषदुषणीः...ओषधी: | ८.७.१०

वृक्ष - वनस्पति संसार को प्राणवायु (Oxygen) देते है | अत: उन्हें' पुरुषजीवनी ' कहा गया है | ये मनुष्य कोप्राणवायु - रूपी दूध पिलाते है | अत: इन्हें माता कहा गया है | वृक्ष - प्रदूषण को नष्ट करते है और वायुमंडल के दूषित तत्वों को समाप्त करते है |

(क) ओषधीरिति मातर: | यजु १२.७८

(ख) वीरुध: पारयिष्ण्व: | यजु १२.७७

मत्स्य पुराण में कहा गया है कि "दशपुत्रसमो द्रुमः" अर्थात एक वृक्ष जन्कल्याण की दृष्टी से १० पुत्रों के बराबर है | १० पुत्र अपने जीवनकाल में जितना उपकार कर सकते हैं, उतना एक वृक्ष करता है | त्रुग्वेद में कहा गया है कि वृक्ष वनस्पति मानव - मात्र के लिए शक्ति के स्त्रोत है| वृक्ष - वनस्पति परमात्मा के द्वारा दिए हुए वरदान है | यदि ये न हों तो मनुष्य का जीवन रहना कठिन है|

(क) वनस्पतिभ्य: पर्याभुतं सहः | ऋग ६.४७.२७

(ख) ओषधीर्वनसपतीन् पृथिवीं पर्वतान् अप |

.... व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि | ऋग १०.३५.११

अथर्ववेद में कहा गया है कि वृक्षों में देवों का निवास है | ये प्रदूषणरूपी राक्षसों को नष्ट करते है |\

वनस्पति: सह देवैर्न आगन्

रक्ष: पिशाचान् अपबाधमान: | अ १२.३.१५

वृक्ष शिव के रूप हैं- शतपथ ब्राहमण में कहा गया है कि वृक्ष वनस्पतियाँ (ओषधियाँ) पशुपति अर्थात् शिव के रूप है | यजुर्वेद के १६वें अध्याय में शिव को वृक्ष - वनस्पति, वन ओषधि आदि कहा गया है | भगवान् शिव की विशेषता यह है कि वह विष पिटे है की वे कार्बन -डाई-आक्साइड (CO_2) रूपी विष को पिटे है और आक्सीजन (O_2) रूपी

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

अमृत(प्राणवायु) को छोड़ते है | शिव का दूसरा रूप है रूद्र | वह संसार का नाशक है| यदि हम वृक्षों को काटते है तो प्रदूषण बढ़ेगा और विश्व का संहार होगा|

(क) ओषधयो वै पशुपति | शत ब्रा ६.१.३.१२

(ख) नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्य:|

ओषधीनां पतये नम: | यजु १६.१७ से १९

वृक्षों के लाभ - यजुर्वेद में कहा गया है कि वृक्ष बादलों को आकृष्ट करते है और वर्षा के द्वारा पृथ्वी को दृढ करते हैं |

वनस्पति: देवमिन्द्रम् अवर्धयत् |

पृथिवीम् अदंहीत् | यजु २८.२०

वृक्षों को लगावें -ऋगवेद का कथन है कि वृक्षों को लगावें , इनकी सुरक्षा करें, क्योंकि ये जल के स्त्रोतों की रक्षाकरते हैं |

वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं | ऋग् १०.१०१.११

प्रदूषण - रोधक वृक्षादि- वेदों में कुछ वृक्षों और ओषधियों का वर्णन है, जो प्रदूषण रोकते है | इनमें मुख्य हैं -अश्वत्थ (पीपल), कुष्ठ (कुठ) , भद्र (देवदार), चिपद्रू (चिड), अपामार्ग (चिरचिटा), गुग्गुलु (गूगल) आदि| (अथर्व ५.४.१ और ३)

वेदों में अश्वत्थ (पीपल) का बहुत गुणगान है | यह कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा अधिक खींचता है और आक्सीजन की मात्रा अधिक छोड़ता है| अत: इसकी देवता के तुल्य पूजा की जाति है | इसी प्रकारके वृक्षों में नीम और तुलसी अधिक आक्सीजन छोड़ने के कारण पूज्य माने जाते हैं |

अश्वत्थो देवसदन: अथर्व ५.४.३

इसी प्रकार अपामार्ग (चिरचिटा) और गूगल का बहुत महत्त्व वर्णन किया गया है | अपामार्ग के विषय में कहा गया है जहाँ अपामार्ग है , वहाँ किसी प्रकार का रोग और प्रदूषण नहीं आ सकता है | इसी प्रकार गूगल की प्रशंशा में कहा गया है कि जहाँ तक गूगल कि गंध जाती है, वहाँ तक कोई बीमारी या प्रदूषण नहीं हो सकता है |

(क) अपामार्ग .. न तत्र भयमस्ति,

यत्र प्राप्नोष्योषधे | अथर्व ४.१९.२

(ख) न तं यक्ष्मा अरुन्धते |

यं भेषजस्य गुग्गुलो: सुरभिर्गन्धो अश्नुते | अ १९.३८.१

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

यज्ञ , प्रदूषण समस्या का सर्वोत्तम समाधान - यज्ञ याहवन प्राकृतिक संतुलन बनाए रखता है | यह पर्यावरण को शुध्ध करता है | वायुमण्डल को पवित्र रखता है | विविध रोगों को नष्ट करता है और रोग -निवारण के द्वारा दीर्घायु की प्राप्ति का साधन है | यज्ञ के द्वारा भू-प्रदूषण , जल - प्रदूषण , वायु - प्रदूषण और ध्वनि- प्रदूषण को दूर किया जा सकता है |

यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रकिया है| इसके द्वारा वायुमण्डल में आक्सीजन और कार्बन डाई आक्साइड का संतुलन बना रहता है | प्रकृति में एक चक्र (Circle) की व्यवस्था है | जिसके अनुसार प्रत्येक पदार्थ घूम फिरकर अपने मूल स्थान पर पहुँचता है | प्रकृति में यह चक्र निरन्तर चल रहा है | इसी से ऋतुचक्र, वर्ष - चक्र आदि परावर्तित होते रहेते है | ब्राहमण ग्रंथो और उपनिषद आदि मेंपर्यावरण प्रदूषण को रोकने का सर्वोत्तम साधन यज्ञ बताया गया है | यज्ञ सभी प्रकार के प्रदूषणों को रोकता है |

(क) एष ह् वै योत्रयं पवते | छा उप ४.१६.१

(ख) यज्ञो वै भुवनस्य नाभि: | तैति ब्रा ३.१.५.५

(ग) भैषज्ययज्ञा वा एते , ऋतु - संधिषु प्रयुज्यन्ते,

ऋतुसंधिषु वै व्याधिर्जायते| गोपथ ब्रा ३.९.५.५

अग्नि प्रदूषणनाशक- वेदों में पर्यावरण की शुध्धि के लिए अग्नि का बहुत उल्लेख है| अग्नि का गुण है - दाहकना | जहाँ भी कोई अशुध्धि है, प्रदूषण है या घातक कीटाणु है, अग्नि उसको नष्ट करता है | इस दोष नाशन के कारण ही वेद में अग्नि का सर्वत्र गुणगान है| प्रदूषण फ़ैलाने वाले तत्वों को वेद में वृत्र, राक्षस , अग्नि, असुर आदि कहा गया है |

(क) अग्निस्तिग्मेन शोचिषा

यासद् विश्वं न्यत्रिणम् | ऋग ६.१६.२८

(ख) अग्नी रक्षांसि सेधति | अथर्व ८.३.२६

सूर्य प्रदुषणनाशक - वेदों में सूर्य को प्रदूषण का प्रबल नाशक बताया गया है | ऋगवेद और अथर्ववेद में कहा गया है कि उदय होता हुआ सूर्य दिखाई पड़ने वाले और न दिखाई पड़ने वाले सभी प्रकार के दूषितकीटाणुओ को नष्ट करता है| सूर्य अपनी किरणों से वायुमण्डल के प्रदूषण को नष्ट करता है और स्वच्छ बनाता है|

(क) उत् पुरस्तात् सूर्यएति विश्वद्रष्टो अदृष्टहा |

द्रष्टान् च ध्नन् अद्रष्टान् च,

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

सर्वान् च प्रमृणन् किमीन् | ऋग १.१९१.८

(ख) सविता पुनातु - अछिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि : | यजु ४.४

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वेदों में प्रदूषण - निवारण पर बहुत विचार किया गया है और प्रकृति की सुरक्षा के लिए उपाय बताए गए है | जितना अधिक वृक्षों को लगाएंगे , उतना ही प्रदूषण नष्ट होगा |

इस तरह चारो वेदों में असीम और अनंत ज्ञान भण्डार है । वेदों के आतंरिक स्वरूप पर जब द्रष्टि जाती है तो उसके उच्च कोटि के विचार, उच्च कोटि की कल्पना तथा उच्च कोटि की विचारधारा उदात्त है । हमारी सभ्यता संस्कृति आचार प्रणाली दर्शन सब कुछ वेद की देन है । इसलिए वेद के लिए निःसंकोच रूप से यह श्लोक कहा गया है ।

“धर्मे च अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ:

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्ने हास्ति न तत् क्वचित्॥”

जो कुछ वेद में है वही अन्यत्र शाश्त्रो में है। वेदों से ही समस्त विध्याओ का प्रादुर्भाव है ।

संदर्भग्रंथो

१.Ecological and Environment Management C.C. Park, Butterworth London 1980 P.28

२.पर्यावरणभूगोल सविन्द्र सिंह, प्रयाग पुस्तक भण्डारइकाहाषाद2005 पृ.रा

३. वही, दुर्गान्त पाण्डेय

४. अभिनन्दन भारती एवं संस्कृतवाड्मय में पर्यावरण चेतना, द्रष्टव्य , विखभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर भदोही उ.प्र2004 पृ83,179,186

५. वैदिक निबंध डॉ रघुवीर वेदालंकार , न्यु भारतीय बुक कारपोरेशन, दिल्ली 2007 पृ.53

७. भारतीय दर्शन डा एस राधाकृष्णन भाग -1 पृ.

८. वेदों में विज्ञान डॉ कपिलदेव त्रिवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् भदोही 2004

९.ऋग्वेद का सुबोध 1,2,3,4 - भाग

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

पद्मभूषण ब्रह्मर्षि पं श्री पाद दामोदर सातवलेकर 2, स्वाध्याय मंडल पारडी, जी-वलसाड, किल्ला-पारडी

१०. यर्जुवेद - पद्मभूषण ब्रह्मर्षि पं श्री पाद दामोदर सातवलेकर 2, स्वाध्याय मंडल पारडी

११. अर्थववेद का सुबोध भाग 1,2,3-

पद्मभूषण ब्रह्मर्षि पं श्री पाद दामोदर सातवलेकर 2, स्वाध्याय मंडल पारडी

१२. दैवत संहिता - आयुर्वेद प्रकरण - पद्मभूषण ब्रह्मर्षि पं श्री पाद दामोदर सातवलेकर 2, स्वाध्याय मंडल पारडी

१३. અથર્વવેદનો સુબોધ ભાષ્ય– દીર્ધજીવન અને આરોગ્ય પં શ્રીપાદ

१४. ભારતીય પર્યાવરણીય આચાર શાસ્ત્ર–ओम प्रकाश महेता, 2015-

न्यु भारतीय बुककोर्पोरेशन ISBN 81-8315-275-9

१५. वेद विज्ञान- डी.आर.खन्ना दिल्ली -११०००२ ISBN 81-7035-668-7, 978-81-7035-668-4

१६. वैदिक साहित्य मे जल तत्व और उसके प्रकार, डॉ.ज्ञानप्रकाश शास्त्री, परिमल पब्लिकेसन, दिल्ली-११०००७

प्रथम संस्करण-२००४ ISBN-81-7110-229-6

१७. वैदिक निबंधमाला, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, विध्यानिधि प्रकाशन, खजुरी खास दिल्ली -११००९४

प्रथम संस्करण - २००१, ISBN-81-86700-45-5